अतिथिदेवो भव

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» 'अतिथिदेवो भव' – उपनिषद-वचन का परिचय

» राधिका और बिल्ली के नए अतिथि – कहानी की शुरुआत

» राधिका की अतिथि-सेवा – दूध पिलाना और नाम रखना

» पितामही का उपदेश – अतिथि को देवता समान सेवा

» अतिथि-सेवा का जीवन में महत्व

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. 'अतिथिदेवो भव' वाक्य को शब्द-शब्द तोड़कर उसका शाब्दिक अर्थ करो।

› 'अतिथि' = मेहमान (जो बिना बताए आए)

› 'देवः' = देवता

› 'भव' = हो जाओ/समझो (आदेशवाचक क्रिया-रूप)

उत्तर – 'अतिथिदेवो भव' का शाब्दिक अर्थ है – 'अतिथि को देवता समझो' या 'अतिथि में देवता का भाव रखो'।

उदाहरण 2. राधिका ने बिल्ली के चार बच्चों के नाम किन विशेषताओं के आधार पर रखे – हर नाम और उसका कारण जोड़ो।

› तन्वी – 'आकृत्या सुन्दरी' अर्थात् सुंदर आकृति के कारण

› मृद्वी – 'स्पर्शेन अतीव कोमला' अर्थात् छूने में बहुत कोमल होने के कारण

› शबलः – 'चित्रवर्णः' अर्थात् रंग-बिरंगा होने के कारण; भीमः – 'किञ्चित् स्थूलः' अर्थात् थोड़ा मोटा होने के कारण

उत्तर – तन्वी (सुंदर), मृद्वी (कोमल), शबलः (रंग-बिरंगा), भीमः (थोड़ा मोटा) – हर नाम बच्चे की शारीरिक विशेषता दर्शाता है।

उदाहरण 3. राधिका की तीन सेवा-क्रियाओं को पाठ के अनुसार क्रम में लिखो – बिल्ली के आने-जाने का ध्यान रखना, दूध देना, बच्चों के पास जाना।

› पहला: 'मार्जारी कदा गच्छति कदा आगच्छति एतत् राधिका जानाति' – राधिका बिल्ली की दिनचर्या जानती है

› दूसरा: 'सा मार्जार्यै क्षीरं ददाति' – राधिका बिल्ली को दूध देती है

› तीसरा: 'शावकानां समीपं राधिका गच्छति' – राधिका बिल्ली के बच्चों के पास भी जाती है

उत्तर – क्रम: बिल्ली की दिनचर्या जानना दूध देना बच्चों के पास प्रेम से जाना।

उदाहरण 4. पितामही के वाक्य 'अतिथिः अस्माकं देवः अस्ति इति चिन्तयतु। तस्य आदरेण सेवां करोतु' का शब्दार्थ करके भावार्थ लिखो।

› 'अतिथिः अस्माकं देवः अस्ति' = अतिथि हमारा देवता है

› 'इति चिन्तयतु' = ऐसा सोचो/मानो

› 'तस्य आदरेण सेवां करोतु' = उसकी आदरपूर्वक सेवा करो

उत्तर – भावार्थ: 'अतिथि को अपना देवता मानो और उसकी सेवा पूरे आदर के साथ करो' – यही अतिथि-सत्कार की सच्ची भावना है।

उदाहरण 5. पाठ में बताया गया है कि अतिथि-सेवा 'पञ्चमहायज्ञेषु' शामिल है। इसका मतलब समझाते हुए बताओ कि यह अतिथि-सेवा को कितना महत्व देता है।

› 'पञ्च महायज्ञ' का अर्थ है पाँच बड़े/पवित्र कर्तव्य जो प्राचीन भारतीय परंपरा में हर गृहस्थ को करने होते थे

› इनमें से एक है 'अतिथियज्ञ' यानी अतिथि की सेवा

› इसका मतलब है अतिथि-सेवा को धार्मिक कर्तव्य जितना ही पवित्र और अनिवार्य माना गया है, यह मामूली शिष्टाचार नहीं

उत्तर – अतिथि-सेवा को 'महायज्ञ' के समान पवित्र कर्तव्य माना गया है – यह दिखाता है कि भारतीय संस्कृति में इसे कितना ऊँचा स्थान दिया गया है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• उपनिषद-वचनों के अर्थ पूछे जाने पर शब्दशः अनुवाद के साथ-साथ उसका व्यावहारिक भाव भी लिखो, इससे उत्तर पूर्ण लगता है।

• पात्रों के नाम और उनकी विशेषताएँ जोड़ी बनाकर याद रखने वाले सवाल परीक्षा में आम हैं – नाम और गुण दोनों सही जोड़ो, आधा-अधूरा जवाब अंक नहीं दिलाता।

• कहानी के घटनाक्रम (sequence) पूछने वाले सवालों में हमेशा पाठ में दिए क्रम का पालन करो, अपनी तरफ से घटनाएँ आगे-पीछे मत करो।

• पात्र के संवाद/उपदेश का भावार्थ पूछे जाने पर संवाद को शब्दशः न दोहराकर उसका गहरा अर्थ अपने शब्दों में समझाओ – इससे बेहतर अंक मिलते हैं।

• 'पाठ से मिलने वाली शिक्षा' जैसे निबंधात्मक सवालों में हमेशा पाठ के मुख्य वचन (अतिथिदेवो भव) को उद्धृत करते हुए उत्तर शुरू करो, इससे उत्तर प्रभावी लगता है।

एक नज़र में रिवीज़न

› 'अतिथिदेवो भव' = अतिथि को देवता समान समझो; भारत में अन्य प्राणी भी अतिथि-रूप में प्रिय होते हैं।

› राधिका के घर आए 'अतिथि' – एक बिल्ली और उसके चार बच्चे: तन्वी, मृद्वी, शबलः, भीमः।

› राधिका की सेवा: बिल्ली की दिनचर्या जानना, दूध देना, बच्चों से प्रेमपूर्ण व्यवहार करना।

› पितामही का उपदेश: अतिथि कब आए पता नहीं, पर जब आए तो देवता समान आदर से सेवा करो।

› अतिथि-सेवा पञ्चमहायज्ञों में शामिल; यह बिना शर्त, आदरपूर्वक और सभी प्राणियों के लिए होनी चाहिए।